



ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

उड़ान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स 2025

प्राचीन भारत



विषयक एवं कॉम्प्रेहेन्सिव रिवीजन सीरीज

विषय सूची

| | | | |
|----------------------------------|-----------|--------------------------------------------------------------------|-----------|
| 1. प्रारंभिक इतिहास | 1 | ● प्राक्-ऐतिहासिक (प्रागैतिहासिक) काल 1 | 31 |
| | | ● पुरापाषाण युग (लगभग 3.3 मिलियन वर्ष से 10,000 ईसा पूर्व) 1 | 31 |
| | | ● मध्यपाषाण (मेसोलिथिक) काल (10,000-1,000 ईसा पूर्व) 3 | 31 |
| | | ● नवीन पाषाण/नवपाषाण काल 5 | 32 |
| | | ● ताम्रपाषाण काल (2600-1200 ईसा पूर्व) 6 | 32 |
| | | ● लौह युग (1100-800 ईसा पूर्व) 9 | 33 |
| 2. सिंधु घाटी सभ्यता | 11 | ● बौद्ध दर्शन 31 | 34 |
| | | ● बौद्ध धर्म के पतन के कारण 31 | 34 |
| | | ● जैन धर्म 31 | 34 |
| | | ● जैन धर्म के सिद्धांत 32 | 34 |
| | | ● जैन धर्म का विभाजन 32 | 34 |
| | | ● जैन दर्शन 32 | 34 |
| | | ● जैन संगीत 33 | 34 |
| | | ● जैन साहित्य 33 | 34 |
| | | ● जैन धर्म के संरक्षक 34 | 34 |
| 3. वैदिक काल | 18 | 5. मगध साम्राज्य | 35 |
| | | ● महाजनपदों का उदय 35 | 35 |
| | | ● मगध साम्राज्य का उत्थान और विकास 37 | 35 |
| | | ● हर्यक वंश 37 | 37 |
| | | ● शिशुनाग वंश (413-345 ईसा पूर्व) 38 | 37 |
| | | ● नंद वंश (345 - 321 ईसा पूर्व) 38 | 38 |
| | | ● मगध साम्राज्य के अधीन प्रशासन 38 | 38 |
| | | ● मगध साम्राज्य के अधीन समाज 39 | 38 |
| | | ● मगध साम्राज्य के अधीन अर्थव्यवस्था 39 | 39 |
| | | ● ईरानी आक्रमण और संपर्क 40 | 39 |
| 4. बौद्ध धर्म और जैन धर्म | 26 | 6. मौर्य साम्राज्य | 42 |
| | | ● महत्वपूर्ण शासक 42 | 42 |
| | | ● मौर्य प्रशासन 46 | 46 |
| | | ● मौर्यकालीन अर्थव्यवस्था 46 | 46 |
| | | 7. मध्य एशियाई संपर्क | 49 |
| | | ● इंडो-ग्रीक 49 | 49 |
| | | ● शक 50 | 50 |
| | | ● पार्थियन (पहलव) 50 | 50 |
| | | ● कुषाण 50 | 50 |
| | | ● कनिष्ठ 50 | 50 |
| | | ● मध्य एशियाई संपर्क का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव 51 | 50 |
| | | ● महत्वपूर्ण शासक 54 | 51 |
| | | ● भौतिक संस्कृति 54 | 54 |
| | | ● कृषि और अर्थव्यवस्था 54 | 54 |

8. सातवाहन साम्राज्य

54

| | |
|----------------------------|----|
| ● सामाजिक संगठन | 55 |
| ● प्रशासनिक व्यवस्था | 55 |
| ● धर्म | 55 |
| ● वास्तुकला | 55 |
| ● भाषा | 56 |
| ● साम्राज्य का पतन | 56 |

9. गुप्त साम्राज्य

57

| | |
|--------------------------------------------|----|
| ● गुप्त साम्राज्य के महत्वपूर्ण शासक | 58 |
| ● प्रशासन | 59 |
| ● अर्थव्यवस्था | 61 |
| ● समाज | 63 |
| ● धर्म | 63 |
| ● न्याय व्यवस्था | 63 |
| ● कला और वास्तुकला | 63 |
| ● साम्राज्य का पतन | 65 |

10. हर्षवर्द्धन

66

| | |
|----------------------------------|----|
| ● हर्षवर्द्धन (606-647 ई.) | 66 |
| ● सैन्य विजय | 66 |
| ● प्रशासन | 67 |
| ● समाज | 68 |

11. दक्षिण के साम्राज्य

69

| | |
|--------------------------|----|
| ● चालुक्य | 69 |
| ● पल्लव | 70 |
| ● बनवासी के कर्दंब | 74 |
| ● हंगल के कर्दंब | 74 |

12. संगम काल

76

| | |
|-------------------------------------------------|----|
| ● संगम काल | 76 |
| ● तीन संगम | 76 |
| ● संगम ग्रंथ | 77 |
| ● संगमकालीन राजव्यवस्था | 77 |
| ● संगमकालीन सामाजिक व्यवस्था | 78 |
| ● संगमकालीन अर्थव्यवस्था | 78 |
| ● विचारधारा और धर्म | 79 |
| ● चौल वंश | 79 |
| ● चेर | 79 |
| ● पांड्य | 80 |
| ● कलभ्रों का युग (संगम काल के बाद का समय) | 80 |

13. परिशिष्ठ

82

| | |
|----------------------------------------------------------|----|
| ● प्राक्-हड्पा संस्कृति का क्षेत्रीय विस्तार | 82 |
| ● क्षेत्रीय संस्कृतियाँ | 82 |
| ● हड्पा सभ्यता का क्षेत्रीय विस्तार | 83 |
| ● प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों का कालक्रम | 83 |
| ● दक्षिण भारत | 83 |
| ● मध्य और पश्चिम भारत | 84 |
| ● पूर्वी भारत | 84 |
| ● प्रारंभिक वैदिक काल तथा उत्तर वैदिक काल की तुलना | 85 |
| ● छः परंपरागत भारतीय दर्शन (षड्-दर्शन) | 85 |
| ● बौद्ध धर्म संबंधी प्रमुख शब्द और उनके उद्देश्य | 86 |
| ● जैन धर्म सबंधी प्रमुख शब्द और उनके उद्देश्य | 86 |
| ● अशोक के प्रमुख अभिलेख / शिलालेख | 87 |
| ● अशोक के लघु अभिलेख / शिलालेख | 87 |
| ● प्रमुख गुफाएँ | 87 |
| ● प्राचीन भारत की प्रमुख महिलाएँ | 88 |
| ● प्रमुख विदेशी यात्री | 88 |
| ● महत्वपूर्ण विद्वान्, कवि और नाटककार | 89 |
| ● मानचित्र के माध्यम से प्राचीन भारत पर एक नज़र | 90 |

इतिहास को तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है: प्राक्-ऐतिहासिक (प्रार्गैतिहासिक) काल, आद्य-ऐतिहासिक काल और ऐतिहासिक काल।

- प्रार्गैतिहासिक काल में लेखन के आविष्कार से पहले की घटनाओं का समावेश है। आमतौर पर तीनों पाषाण युग इस काल का वर्णन करते हैं।
- आद्य-ऐतिहासिक काल, सामान्यतः प्रार्गैतिहासिक और ऐतिहासिक काल के बीच के काल का वर्णन करता है। इस समय लेखन का ज्ञान तो था, लेकिन उनकी लिपियाँ अभी तक समझी नहीं जा सकी हैं।
 - हड्ड्या लिपि को अभी तक समझा नहीं जा सका है, लेकिन मेसोपोटामिया के लेखों में इस सभ्यता का उल्लेख मिलता है।
 - इसी प्रकार, 1500-600 ईसा पूर्व की वैदिक सभ्यता में साहित्य की मौखिक परंपरा प्रचलित थी।
- लेखन के आविष्कार के बाद, अतीत का अध्ययन ही इतिहास है। इतिहास के सामाजिक अध्ययन का आधार, लिखित तथा पुरातात्त्विक स्रोत हैं।

प्राक्-ऐतिहासिक (प्रार्गैतिहासिक) काल

भारतीय पाषाण युग को तीन मुख्य वर्गों में विभाजित किया गया है, जो हैं:

| क्रम संख्या | अवधि | समय सीमा |
|-------------|---------------|---------------------------|
| 1. | पुरापाषाण काल | 5,00,000-10,000 ईसा पूर्व |
| 2. | मध्यपाषाण काल | 10,000-6000 ईसा पूर्व |
| 3. | नवपाषाण काल | 6,000-1000 ईसा पूर्व |

पुरापाषाण युग (लगभग 3.3 मिलियन वर्ष से 10,000 ईसा पूर्व)

परिचय

‘पुरापाषाण’ का अर्थ है “पुराना पाषाण युग” और इसकी शुरुआत पत्थर के औजारों के प्रथम प्रयोग से होती है। यह 3.3 मिलियन वर्ष पहले होमिनिन्स (होमो सेपियस के ठीक पहले के पूर्वज) द्वारा पत्थर के औजारों के सबसे पहले ज्ञात प्रयोग

से लेकर प्लिस्टोसीन या हिम युग, 11,650 ईसा पूर्व (वर्तमान काल से पहले) के अंत तक का काल है।

- अनुमानतः मानव के पूर्वजों का विकास सबसे पहले अफ्रीका में हुआ होगा और बाद में वे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में पहुँचे होंगे। अफ्रीका से बाहर प्रवास करने वाली सबसे प्रारंभिक मानव पूर्वज प्रजाति होमो इरेक्टस थी।
- वे आखेटक और संग्राहक थे जो गुफाओं और चट्टानी आश्रय स्थलों में रहते थे। उन्होंने इस चरण के अंत में आग का प्रयोग भी सीख लिया।
- वे हाथ की कुल्हाड़ी, क्लीवर, चाकू, ब्लेड, खोदनी (ब्यूरिन) और खुरचनी (स्क्रेपर्स) जैसे बिना पॉलिश किए पत्थरों का इस्तेमाल किया करते थे। उन्हें भारत में क्वार्ट्जाइट-मानव भी कहा जाता है क्योंकि वे अपने विभिन्न औजारों के लिए क्वार्ट्जाइट का उपयोग करते थे।

जलवायु की प्रकृति में परिवर्तन और लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पत्थर के औजारों की प्रकृति में हुए परिवर्तन के अनुसार, पुरापाषाण युग को तीन चरणों में विभाजित किया गया है:

- पूर्व/निम्न-पुरापाषाण युग (20,00,000-60,000 ईसा पूर्व)
- मध्य-पुरापाषाण युग (3,85,000-40,000 ईसा पूर्व)
- उत्तर-पुरापाषाण युग (40,000-10,000 ईसा पूर्व)

निम्न/प्रारंभिक पुरापाषाण काल (20,00,000-60,000 ईसा पूर्व)

ऐसा माना जाता है कि प्रारंभिक पुरापाषाण काल-खंड के दौरान मानव-पूर्वज प्रजाति, होमो इरेक्टस भारत में निवास करती थी।

वर्ष 1982 में, नर्मदा घाटी में आधारिक जमा हुए निक्षेप में आंशिक होमिनिड खोपड़ी प्राप्त हुई थी।

- यह जीवाश्म, भारत में पाया जाने वाला सबसे पुराना होमिनिन जीवाश्म है और इसे नर्मदा मानव या शिवपिथेकस सिवलेंसिस के नाम से जाना जाता है। यह मध्य प्रदेश में होशंगाबाद के पास हथनोरा में पाया गया था।
- इसे पुरान होमो सेपियन्स का प्रतिनिधि माना जाता है।
- यह भारत में मानव-पूर्वजों का एकमात्र मौजूदा जीवाश्म है।
- यह उपमहाद्वीप पर प्रारंभिक मानव-पूर्वजों की उपस्थिति का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

निम्न पुरापाषाण स्थल

| क्षेत्र | संबंधित स्थल | प्रमुख विशेषताएँ |
|-------------------|--------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| उत्तर पश्चिम भारत | सोहन नदी घाटी (पंजाब, वर्तमान में पाकिस्तान में) | भारतीय उपमहाद्वीप में ज्ञात सबसे प्राचीन पुरापाषाण स्थलों में से एक। |
| उत्तर भारत | बेलन घाटी (मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश) | पुरापाषाण और मध्यपाषाण कालीन साक्ष्य; प्रारंभिक माइक्रोलिथिक उपकरण (छोटे पत्थरों से निर्मित) और निवास स्थल की उपस्थिति। |

| | | |
|----------------|------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------|
| दक्षिण भारत | अधिरमपक्कम, पल्लवरम और गुडियम (चेन्नई के निकट) | निम्न पुरापाषाण संस्कृति के साक्ष्य; एच्यूलियन परंपरा के पत्थर के उपकरण (हस्त कुल्हाड़ी और क्लेवर) |
| दक्षिण का पठार | हुन्सगी घाटी और इसामपुर (कर्नाटक) | एच्यूलियन स्थलों की उपस्थिति के साथ व्यापक उपकरण-निर्माण के साक्ष्य। |
| मध्य भारत | भीमबेटका (मध्य प्रदेश) | यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल; पुरापाषाण, मध्यपाषाण और नवपाषाण कालीन साक्ष्य वाले शैलाश्रय। |

- वितरण:** निम्न पुरापाषाणकालीन औजार गंगा घाटी के कुछ क्षेत्रों, दक्षिणी तमिलनाडु और पश्चिमी घाट के पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर भारत के अधिकांश हिस्सों में पाए जाते हैं।

कुछ प्रमुख स्थान निम्नलिखित हैं:

- पंजाब में सोहन नदी घाटी (अब पाकिस्तान में), बेलन घाटी (मिर्जापुर जिला, उत्तर प्रदेश)।
- चेन्नई के पास अधिरमपक्कम, पल्लवरम और गुडीयम।
- कर्नाटक में हुन्सगी घाटी और इसामपुर और तथा मध्य प्रदेश में भीमबेटका।
- जीवनशैली:**
 - इस युग के प्रारंभिक मानव मुख्य रूप से आखेटक और संग्राहक थे और खानाबदोश जीवन जीते थे।
 - वे पशुओं का शिकार करते थे और कंदमूल, मेवे और फल इकड़ा करते थे। वे हिंसक पशुओं (Predators) द्वारा मारे गए पशुओं के मांस और हड्डियों को खाते थे।
 - ◆ नर्मदा घाटी में एलिफस नामाडिकस (विशाल दाँत वाला प्रागैतिहासिक हाथी), स्टेगोडॉन गणेशा (एक विशाल प्रागैतिहासिक हाथी), बोस नामाडिकस (जंगली मवेशी) और इक्वस नामाडिकस (विलुप्त विशाल घोड़े जैसा पशु) के पशु जीवाशम प्राप्त हुए हैं।

एच्यूलियन और सोहनियन संस्कृति

| पहलू | एच्यूलियन संस्कृति | सोहनियन संस्कृति |
|-----------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------|
| उपकरण | मुख्यतः हस्त कुल्हाड़ी और क्लेवर | चॉपर और काटने के उपकरण |
| भौगोलिक विस्तार | मध्य और दक्षिण-पूर्वी भारत (चेन्नई के निकट) में अधिक; अत्यधिक वर्षा के कारण पश्चिमी घाट, तटीय और पूर्वोत्तर भारत में अनुपस्थिति। | उत्तर-पश्चिमी भाग तक सीमित; इसका नाम पाकिस्तान में सोहन नदी घाटी के नाम पर रखा गया है। |
| अन्य विशेषताएँ | सम्पूर्ण भारत में सुविवेचित स्थल | सीमित प्रलेखन, केवल उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र तक सीमित |

मध्य पुरापाषाण काल (3,85,000-40,000 ईसा पूर्व)

- मध्य पुरापाषाण चरण के दौरान, लिथिक प्रौद्योगिकी में कई परिवर्तन देखने को मिलते हैं। व्यवहार संबंधी नवीनता के कारण, मानव-पूर्वजों की प्रजातियों में भिन्नता आई।
- भारत में इस चरण की पहचान सबसे पहले एच.डी. सांकलिया ने नेवासा (अहमदनगर, महाराष्ट्र) में प्रवरा नदी पर की थी।
- अफ्रीकी मध्य पाषाण युग का संबंध होमो सेपियन्स से है, यह यूरोप में निंएंडरथल से जुड़ा है।
 - इस दौरान भारत में होमिनिन जीवाशम हड्डी का कोई साक्ष्य नहीं मिला है।
- वितरण:** नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा और यमुना के क्षेत्रों तथा तुंगभद्रा और सोन नदी घाटी के दक्षिण में इस काल के साक्ष्य पाए जाते हैं।

- ◆ अत्तिरमपक्कम में इक्वस के दाँत, जलीय भैंस और नीलगाय के अवशेष के साथ-साथ अन्य 17 पशुओं के खुर के निशान प्राप्त हुए हैं।

इक्वस पशुओं की प्रजाति से संबंधित है, जिसमें घोड़े, गधे और जेब्रा शामिल हैं।

- होमो इरेक्टस, नदी घाटियों के पास गुफाओं और चट्टानी आश्रय स्थलों में रहते थे, जैसा कि मध्य प्रदेश के भीमबेटका और चेन्नई के पास गुडीयम में साक्ष्य मिले हैं।
- होमो इरेक्टस में होमो सेपियन्स जैसी जटिल भाषा संस्कृति नहीं थी। उन्होंने कुछ ध्वनियाँ या शब्द व्यक्त किए होंगे और सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया होगा।

औजार

- पहले पुरापाषाणकालीन औजार की पहचान वर्ष 1863 में रॉबर्ट ब्रूस फूट द्वारा चेन्नई के पास पल्लवरम नामक स्थान पर की गई थी।
- औजारों में पश्चिमी एशिया, यूरोप और अफ्रीका में उपयोग किए जाने वाले औजार और हाथ की कुल्हाड़ी, चाकू तथा क्लीवर शामिल थे। औजारों में भौतिक समरूपता थी, जो प्रागैतिहासिक मानव के उच्च-गुणवत्ता वाले संज्ञानात्मक (धारणा) कौशल और क्षमताओं को प्रकट करती थी।

निंएंडरथल

- निंएंडरथल लगभग 4,00,000 से 40,000 ई.पूर्व यूरेशिया में रहते थे।
- वे पुरातन मानवों की एक प्रजाति थी, जो आधुनिक मानवों से निकट का संबंध रखते थे।
- **जीवन के तरीके:** मानव-पूर्वज आखेटक व संग्राहक थे और खुले में, गुफाओं में चट्टानी आश्रय स्थलों में निवास करते थे।
- **औजार:** प्रमुख औजारों में हाथ की कुल्हाड़ियाँ, क्लीवर, चाकू, काटने के उपकरण, खुरचनी।
 - ◆ फैक्ने वाला नुकीला औजार या कंधे पर रखने वाला भाला और फ्लेक्स चाकू शामिल हैं। शल्क (फ्लेक) उद्योग में खुरचनी (स्क्रेपर्स), भाला (पॉइंट्स) और बरमा (बोर्स) जैसे औजार प्रमुख थे।

औजार छोटे होते गए और अन्य औजारों की तुलना में हाथ की कुल्हाड़ियों के उपयोग में कमी आई।

चक्रमक (चर्ट), जैस्पर, कैल्सेडनी और क्वार्ट्ज का उपयोग उपकरण बनाने के लिए किया जाता था।

उत्तर-पुरापाषाण काल (40,000-10,000 ईसा पूर्व)

- आधुनिक मानव लगभग 3,00,000 वर्ष पूर्व अफ्रीका में विकसित होकर, 60,000 वर्ष पूर्व एशिया की ओर आए और संभवतः भारत में उत्तर-पुरापाषाण संस्कृति की शुरुआत की।
- यह अवधि औजार प्रौद्योगिकी में नवाचार और मनुष्यों में बढ़ी हुई संज्ञानात्मक क्षमता द्वारा चिह्नित की गई।

| क्षेत्र | स्थल |
|--------------|-------------------------------------------------|
| कर्नाटक | मेरालभावी |
| आंध्र प्रदेश | कुरनूल गुफाएँ |
| तेलंगाना | गोदावरीखानी |
| मध्य प्रदेश | बाघोर I, बाघोर III (सोन घाटी), भीमबेटका (भोपाल) |
| महाराष्ट्र | पाटन |
| झारखंड | छोटानागपुर का पठार |

वितरण:

- कर्नाटक में मेरालभावी, आंध्र प्रदेश में कुरनूल गुफाएँ और तेलंगाना में गोदावरीखानी।
- मध्य प्रदेश में सोन घाटी का बाघोर I और बाघोर III भूमि।
- पाटन (महाराष्ट्र), भोपाल, छोटानागपुर पठार और भीमबेटका।

भीमबेटका और पाटन (जलगाँव, महाराष्ट्र) के उत्तरी पुरापाषाण (25,000 वर्ष पूर्व) स्थलों से, शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके पाए गए हैं।

निवास स्थल:

- इस काल के लोग रहने के लिए गुफाओं के साथ-साथ खुली जगह का भी उपयोग करते थे।
- कला के साक्ष्य के रूप में पेंटिंग, माला और आभूषण प्राप्त हुए हैं। भीमबेटका में हरे रंग की कुछ पेंटिंग इसी काल की हैं।
- इस काल के शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके, खोल और पत्थर के मनके तथा कंगन/पत्थर का हार, आंध्र प्रदेश के ज्वालापुरम, महाराष्ट्र के पाटन से प्राप्त हुई हैं।

उत्तर प्रदेश के बघोर में एक मंदिर जैसी संरचना पाई गई है, यह भारत में किसी मंदिर का सबसे पहला ज्ञात साक्ष्य है।

- यह समकालीन मंदिरों के समान, बल्कि पत्थर से बनी है।

- औजार: यह काल फलक और अस्थि औजार तकनीक पर आधारित था। आंध्र प्रदेश में कुरनूल गुफाओं में हड्डी के हथियार और पशु अवशेष पाए गए हैं।
- माइक्रोलिथ (छोटे पत्थर के हथियार) का निर्माण किया गया था, तथा ये औजार विभिन्न प्रकार के सिलिका युक्त कच्चे माल का उपयोग करके बनाए गए थे।

मध्यपाषाण (मेसोलिथिक) काल (10,000-1,000 ईसा पूर्व)

ऐसा माना जाता है कि भारत में मध्यपाषाण युग आखिरी हिमयुग के अंत के आसपास शुरू हुआ और नवपाषाण युग की शुरुआत तक जारी रहा।

मध्यपाषाण संस्कृति की तिथि, विश्व के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न है। यह संस्कृति कुछ क्षेत्रों में पूर्व-कृषि काल की है। लिवेन्ट (पूर्वी भूमध्यसागरीय) में, ये 20,000 और 9500 ईसा पूर्व के बीच निर्धारित किए गए हैं।

- जलवायु: हिमयुग के बाद, ग्लोबल वार्मिंग के आगमन के साथ, मानव समूह अत्यधिक गतिशील हो गए और विभिन्न पारिस्थितिक क्षेत्रों पर अधिकार करना शुरू कर दिया।

- मानसून का प्रतिरूप अस्तित्व में आया, कुछ क्षेत्रों में बहुत वर्षा होती थी। इस काल में राजस्थान के डीडवाना में मीठे पानी की झीलें मौजूद थीं।
- इस काल की पशुओं की हड्डियाँ मध्यपाषाण काल के दौरान शुष्क, पर्णपाती प्रकार के वन होने का संकेत देती हैं।

- भौगोलिक वितरण: मेसोलिथिक स्थानों को पूरे भारत में देखा जा सकता है, जो समुद्र तट से लेकर पहाड़ों तक फैला हुआ है।

- स्थल: पैसरा (मुंगेर, बिहार); लंधनाज (गुजरात); बाघोर II, चोपानी मांडो (मांडो, सराय नाहर राय, महदहा और दमदामा (सभी उत्तर प्रदेश में); संगनकल्लू और किब्बानहल्ली (कर्नाटक))।
- शैलाश्रय स्थल उत्तर प्रदेश के लेखहिया और बघही खोर एवं मध्य प्रदेश में आदमगढ़ और भीमबेटका अवस्थित हैं।
- मुंबई के टीटीय स्थल; तमिलनाडु और विशाखापत्तनम में थूकुड़ी के टेरी स्थल (टेरे के टीलों के कारण बना एक टीटीय परिदृश्य)।



- जीवनशैली: आजीविका के लिए आखेट और संग्रहण करते थे।

- प्रारंभिक चरण में कृषि का विकास नहीं हुआ था, लेकिन मध्यपाषाण काल के अंत में, मनुष्यों ने पौधों को सीमित रूप से (घेरेलू उपयोग के लिए) बोना शुरू किया और पशुओं को पालतू बनाया, जिसने नवपाषाण जीवन शैली का मार्ग प्रशस्त किया।

- इस काल में लोग आग और शायद भुने हुए भोजन का उपयोग करते थे।
- गुजरात के कानेवाल, लोटेश्वर और रत्नपुर तथा मध्य प्रदेश के आदमगढ़ और भीमबेटका से मवेशियों, भेड़, बकरियों, सुअर और कुते आदि घेरलू पशुओं की हड्डियाँ मिली हैं।
- कानेवाल (गुजरात) से ऊँट की हड्डियाँ मिली हैं।
- मध्य पाषाण काल के लोग अत्यधिक गतिशील थे। वे पशुओं और फसलों के भोजन की तलाश में कई जगहों पर गए। उन्होंने अस्थायी झोपड़ियाँ बनाईं और साथ ही गुफाओं और चट्टानी आश्रय स्थलों (शैलाश्रयों) का भी उपयोग किया।
- अंडाकार और गोलाकार झोपड़ियों के निशान के साथ-साथ संभवतः बैत से बने बाड़ की मवेशी डब/गोबर से पुताई के निशान उत्तर प्रदेश में चोपानी मांडो और दमदमा तथा राजस्थान में बागोर और तिलवाड़ा में पाए गए हैं।

- **विशिष्ट उपकरण/औजार:** उन्होंने वनस्पतियों और जीवों में परिवर्तन के अनुरूप मध्यपाषाणिक औजार का उपयोग किया। इन औजारों ने उन्हें छोटे पशुओं और पक्षियों का शिकार करने में सक्षम बनाया।

- **कला एवं संस्कृति:**

- राजस्थान के चंद्रावती में ज्यामितीय नकाशी वाला एक चकमक (चर्ट) पत्थर, भीमबेटका से ज्यामितीय डिजाइन उत्कीर्ण हड्डी की वस्तुएँ और मानव दाँत मिले हैं।
- शैलचित्र मध्य प्रदेश एवं मध्य भारत के शैलाश्रयों में उपलब्ध हैं। वे लोगों को शिकार करते हुए, पशुओं को फँसाते, मछली पकड़ते और नाचते हुए दिखाए गए हैं।
- मध्य प्रदेश में भोपाल के पास भीमबेटका, रायसेन व पंचमढ़ी और उत्तर प्रदेश में दक्षिणी मिर्जापुर, में भी कला के साक्ष्य वाले कुछ प्रमुख स्थल हैं।
- भीमबेटका चित्रकारी से पता चलता है कि विभिन्न पशुओं का शिकार किया जाता था और इसके लिए पुरुष और महिलाएँ एक साथ शिकार के लिए जाते थे।



प्रागैतिहासिक स्थलों का मानचित्र

(नक्शों की बाहरी रेखा पेमाने में नहीं है)

- **शवाधान:** लोग मृतकों को दफनाने थे, जिससे उनकी मान्यताओं का पता चलता है।
 - उत्तर प्रदेश के महदहा, दमदम और सराय नाहर राय में मानव कंकाल मिले हैं।
 - महदहा में एक पुरुष और एक महिला को एक साथ दफनाया गया था।
 - इन मृतकों को कब्र में सामान के साथ दफनाया जाता था। एक शवाधान में कब्र में एक हाथी दाँत का पेंडेंट मिला है।

नवीन पाषाण/नवपाषाण काल

नवपाषाण काल की शुरुआत लगभग 10,000 ईसा पूर्व में हुई थी, इसमें कृषि और पशुपालन की भी शुरुआत हुई।

नवपाषाण संस्कृति के प्रारंभिक साक्ष्य मिस्र और मेसोपोटामिया, सिंधु क्षेत्र, भारत की गंगा घाटी और चीन के उपजाऊ क्षेत्र से प्राप्त हुए हैं।

नवपाषाण क्रांति

कृषि के विकास से अधिशेष खाद्य उत्पादन हुआ, जिसके परिणामस्वरूप सभ्यताओं का उदय हुआ। मिट्टी के बर्तनों के विकास और स्थायी आवासों के निर्माण के साथ-साथ बड़े-बड़े गाँव अस्तित्व में आए।

- **विशिष्ट उपकरण/औजार:** पॉलिश किया हुआ पत्थर, पत्थर की कुल्हाड़ियाँ, माइक्रोलिथ फलक (ब्लेड)।

नवपाषाणकालीन स्थल और उनकी विशेषताएँ

उत्तर-पश्चिमी भारत की नवपाषाण संस्कृति में फसलों की खेती और पशुओं को पालतू बनाने का सबसे पहला प्रमाण मिलता है। **उत्तर-पश्चिम भारत में नवपाषाण स्थल:** मेहरगढ़, राणा घुंडर्ड, सराय कला और जलीलपुर। ये स्थल अब पाकिस्तान में स्थित हैं। मेहरगढ़ में 7000 ईसा पूर्व के प्रारंभिक नवपाषाण काल के साक्ष्य मौजूद हैं, जहाँ गेहूँ और जौ की खेती की जाती थी। मेहरगढ़ में भेड़, बकरी और मवेशियों को पालतू बनाया गया था। यह संस्कृति सिंधु सभ्यता से पहले की थी।

- **मेहरगढ़ का प्रथम सांस्कृतिक चरण (7000-5500 ईसा पूर्व)** – इस चरण में कृषि के साथ पशुओं को भी पालतू बनाया गया, लेकिन मिट्टी के बर्तनों का उपयोग नहीं किया जाता था।
 - इस समय छह-पारि (row) वाली जौ, एमर और इंकॉर्न गेहूँ, बेर, इलानथाई और खजूर की खेती की जाती थी।
 - वे एक अर्द्ध-खानाबदोश, देहाती समूह थे जो अपने घर मिट्टी से बनाते थे और मृतकों को दफनाते थे।
 - उन्होंने समुद्री सीपियाँ, चूना पत्थर, फिरोजा पत्थर, लाजवर्द (लापीस लाजूली) और बलुआ पत्थर के आभूषणों का उपयोग किया।
- **मेहरगढ़ का दूसरा (5500-4800 ईसा पूर्व) और तीसरा (4800-3500 ईसा पूर्व) सांस्कृतिक चरण**
 - वे लंबी दूरी का व्यापार करते थे। (लाजवर्द पत्थर (लापीस लाजूली) का व्यापार, जो केवल बड़खां में उपलब्ध था।)
 - इन दोनों अवधियों के दौरान मिट्टी के बर्तनों के साक्ष्य भी मिले हैं।
 - टेराकोटा की मूर्तियाँ और चमकीले फेन्स की माला प्राप्त हुई हैं।

नवपाषाणकालीन मेहरगढ़ में प्रारंभिक दंत चिकित्सा

नवपाषाण काल से, लोगों ने पिसा हुआ अनाज और पका हुआ भोजन खाना शुरू कर दिया, जिससे दंत और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हुईं। मानवीय दाँत के (जीवित व्यक्ति का) बेधनी (Drilling) का सबसे पहला साक्ष्य मेहरगढ़ में मिला है। इसे दंत चिकित्सा की शुरुआत के रूप में देखा जाता है।

कश्मीर घाटी

- कश्मीर घाटी में संस्कृति का एक महत्वपूर्ण स्थल बुर्जहोम, महापाषाण काल और प्रारंभिक ऐतिहासिक काल का साक्ष्य प्रस्तुत करता है।
- ठंड के मौसम से बचने के लिए लोग गड्ढों में बने घरों में रहते थे। घर आकार में अंडाकार, नीचे चौड़े और ऊपर संकीर्ण थे।
- वे हड्डी एवं पत्थर से बने औजारों का प्रयोग करते थे। स्मारक स्तंभ (खड़े पत्थर) के साक्ष्य मिले हैं और लाल मिट्टी के बर्तनों (लाल चित्रित मृदभांड) और धातु की वस्तुओं के उपयोग के साक्ष्य भी मिले हैं। वे ताँबे के तीरों का प्रयोग करते थे।
- पशुपालन और कृषि के साक्ष्य मिले हैं।
- उत्थनन के दौरान गेहूँ, जौ, साधारण मटर और मसूर के बीज प्राप्त हुए हैं। मसूर (दाल) के प्रयोग से पता चलता है कि उनका संपर्क मध्य एशिया से रहा होगा।
- वे हड्ड्या सभ्यता के समकालीन थे और उनके साथ व्यापार करते थे।
- नवपाषाण संस्कृति के दो चरणों की पहचान की गई है। उन्हें एसिरेमिक और सिरेमिक चरण कहा जाता है। एसिरेमिक चरण में सेरेमिक का प्रमाण नहीं मिला है। सिरेमिक चरण में मिट्टी के बर्तनों का प्रमाण मिला है।
- कश्मीर घाटी में काली मिट्टी के चित्रित बर्तनों (काला चित्रित मृदभांड), गोमेद (सुलेमानी पत्थर) और कर्नेलियन के मनकों और चित्रित मिट्टी के बर्तनों का भी उपयोग किया जाता था।
- एक समाधि स्थल से जंगली कुत्ते की हड्डियाँ और बारहसिंघा का सींग मिला है। एक पत्थर पर कुत्ते और सूर्य के साथ शिकार के एक दृश्य को उत्कीर्ण कर दर्शाया गया है।

गंगा धाटी और मध्य भारत

- उत्तर प्रदेश में लहुरादेव, चोपानी मांडो, कोलिडहवा और महगरा; बिहार में चिरांद और सेनुआर प्रमुख स्थल हैं।
- लहुरादेव (उत्तर प्रदेश) स्थल से 6500 ईसा पूर्व के चावल की खेती के प्रारंभिक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इन स्थलों पर मिट्टी के बर्तन और पौधे एवं पशुपालन के साक्ष्य भी मिलते हैं। इन स्थलों की विशेषता कॉर्ड मार्क्स हैं।
- छिलके वाली और छह पांति में की जाने वाली जौ की खेती, कई प्रकार के गेहूँ, चावल, मटर, हरा चना और काला चना, छोटी मटर, सरसों, सन (पटसन), अलसी तथा कटहल की खेती के भी साक्ष्य मिलते हैं।
- जंगली पशुओं की हड्डियों के रूप में भेड़, बकरी और मवेशियों आदि की हड्डियाँ भी मिलती हैं।

पूर्वी भारत

- नवपाषाणकालीन स्थल बिहार और पश्चिम बंगाल के कई स्थानों पर पाए गए हैं।
- बीरभानपुर, चिरांद, कुचाई, गोलबाइसन और शंकरजंग महत्वपूर्ण स्थल हैं।
- नुकिले कुंदा (बट), केल्ट, छेनी और मुठरे वाली कुल्हाड़ी जैसे औजार मिलते हैं।

दक्षिण भारत (आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु का उत्तर-पश्चिमी भाग)

- उपयोग किए गए औजारों में पत्थर की कुल्हाड़ियाँ और ब्लेड शामिल हैं।
- आग से पकी हुई मिट्टी की छोटी मूर्तियाँ पशुपालन का संकेत देती हुई पाई जाती हैं।
- इन स्थलों के बीच में राख के टीले हैं और उनके चारों ओर बस्तियाँ हैं। आंध्र प्रदेश में उत्तर और पाल्वोय तथा कर्नाटक में कोडेकल, कुपगल और बुद्धिलाल में राख के ढेर वाले स्थल पाए गए हैं।
- ये स्थल जलस्रोतों वाली ग्रेनाइट पहाड़ियों के पास पाए गए हैं।
- ये स्थल गोदावरी, कृष्णा, पेन्नार, तुंगभद्रा और कावेरी नदी घाटियों में पाए गए हैं।
- कुछ प्रमुख स्थल निम्नलिखित हैं:
 - कर्नाटक:** संगनकल्लू, तेकलकोटा, ब्रह्मगिरि, मास्की, पिकलीहल, वाटकल, हेमभिंगे और हल्लूर।
 - आंध्र प्रदेश:** नागर्जुनकोंडा, रामापुरम, और वीरापुरम।
 - तमिलनाडु:** पैथ्यमपल्ली।

उत्तर पूर्व भारत (অসম और গারো হিল্স)

- यह संस्कृति 2500-1500 ईसा पूर्व की है।
- অসম, মেঘালয়, নাগালেন্ড ও অরুণাচল প্রদেশ কে स्थलों पर मुठरे वाली कुल्हाड़ियाँ और तिरछी स्प्लेड सेल्ट जैसे औजार पाए गए हैं।
- দাওজলী হেঁড়িগ ও সুরতস ঝূম খেতী কে साक्ष्य দেনে वाले कुछ महत्वपूर्ण स्थल हैं।
- রতালু ও তারো (Taro) কী खेती, मृतকों के लिए पत्थर और लকड़ी के स्मारकों के निर्माण के साथ-साथ অঁস্ট্ৰো-এশিয়াই ভাষাওঁ কী উপস্থিতি, ইস ক্ষেত্র কী উল্লেখনীয় বিশেষতা হৈ হৈ।

- ছাঁচি সহস্রাব্দी ईसा पूर्व के चावल की खेती के साक्ष्य उत्तरी विंध्य क्षेत्र, मिर্জাপুর, ইলাহাবাদ ও বলুচিস্তান মেঁ পাএ গে হৈ, জো কৃষি কী প্রাচীনতা কা সাক্ষ্য প্রস্তুত কৰতে হৈ।
- বাদ কে नवपाषाणकालीन निवासी कृषक थे, जो मिट्टी और बेंत से बনे गोलाकार यা আয়তাকার ঘরোঁ মেঁ ব্যবস্থিত জীবন জীতে থৈ।
 - কৃষি উপজ মেঁ রাগী ও কুলথী শামিল হৈ।
- প্রারংভিক চরণ মেঁ হাথ সে বনে मिट्टी के बर्तन मिलते हৈ। বাদ মেঁ, উন্হোনে बर्तনোঁ কো বনানে কে লিএ পৈর ঵ালে চাক কা उपयोग কিয়া।

বেলন ধাটী মেঁ বিংধ্য কে उत्तरी पर्वतीय स्कन्ध पर सभী তীন চরণ, পুরাপাষাণ উসকে বাদ মধ্যপাষাণ ও নবপাষাণ চরণ, ক্রম সে পাএ গে হৈ।

তাম্রপাষাণ কাল (2600-1200 ईसा पूर्व)

नवपाषाण काल के अंत में, धातुओं का उपयोग शुरू हुआ, जिसमें पहली धातु ताँबा थी। ताम्रपाषाण काल में पत्थर और ताँबे के औजारों का उपयोग साथ-साथ देखा गया।

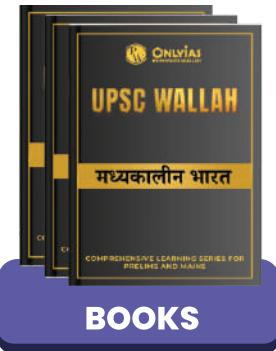
- पूर्व-হড়পা সংস্কৃতিয়াঁ ভারত কী সবসে প্রারম্ভিক তাম্রপাষাণ সংস্কৃতিয়াঁ হৈ জো হড়পা সংস্কৃতি কে পরিপক্ব চরণ কী শুরুআত সে পহলে কে সময় মেঁ পাঈ গাঈ ও হড়পা সম্ভতা কে পতন কে বাদ ভী অস্তিত্ব মেঁ রহী।
- ভারত কে उत्तर-पश्चिमी और पश्चिमी क्षेत्रों में, प्रारंभिक कृषि संस्कृतियाँ नवपाषाण সংস্কৃতিয়োঁ কে বজায় তাম্রপাষাণ সংস্কৃতিয়োঁ সে জুড়ী হৈ। জলোড় মৈদানোঁ ও ঘনে জংগলোঁ বালে ক্ষেত্রোঁ কো ছোড়কর, উনকে সাক্ষ্য পূরে দেশ মেঁ পাএ জাতে হৈ।
- অৌজার: যে লোগ पत्थर की कुल्हाड़िযों জৈসে ছোটे औजारों और হথিয়ারোঁ কা প্রয়োগ কিয়া কৰতে থে, সাথ হী पत्थर-ব্লেড উদ্যোগ ব্যাপক রूপ সে বিকসিত হুआ। চপটী কুল্হাড়িয়াঁ, চুড়িয়াঁ, অংগুঠিয়াঁ, চাকু আদি কে সাথ তাঁবে কী বস্তুঁ ভী প্রাপ্ত হুই হৈ।



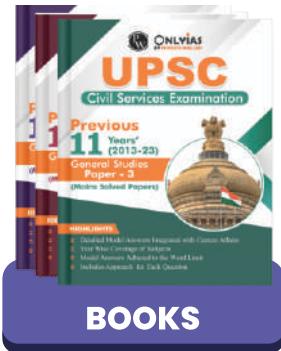
प्रारंभिक तात्रप्रापाण स्थल

| क्षेत्र | प्रमुख स्थल | प्रमुख विशेषताएँ | अर्थव्यवस्था/जीविका |
|------------------------|---------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------|
| दक्षिण-पूर्वी राजस्थान | अहाड़, गिलुंद, गणेश्वर | <ul style="list-style-type: none"> अहाड़: पत्थर की कुलहाड़ी या ब्लेड का अभाव गिलुंद: पत्थर-ब्लेड उद्योग गणेश्वर: हड्पा को तांबे की आपूर्ति <p>[UPSC 2021]</p> | शिकार और कृषि |
| पश्चिमी मध्य प्रदेश | कायथा, एरण (मालवा), नवादाटोली (नर्मदा) | तात्रप्रापाण बस्तियों के साक्ष्य | शिकार और कृषि |
| उत्तर प्रदेश | इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) क्षेत्र में कई स्थल, विंध्य के निकट | कई तात्रप्रापाण बस्तियाँ | शिकार और कृषि |
| पश्चिमी महाराष्ट्र | जोर्वे, नेवासा, दैमाबाद (अहमदनगर), चंदौली, सोनगाँव, इनामगाँव (पुणे) | <ul style="list-style-type: none"> जोर्वे: सपाट और आयताकार तांबे की कुलहाड़ी चंदौली: तांबे की छेनी के साक्ष्य | शिकार, कृषि और प्रारंभिक धातुकर्म |
| पूर्वी भारत | चिरांद (गंगा नदी), पांडु राजार ढीबी, महिषादल (पश्चिम बंगाल) | पूर्वी तात्रप्रापाण बस्तियाँ | शिकार और कृषि |
| आंध्र प्रदेश | कोडेकल, उत्तूर, नागार्जुनकोडा, पालावाँय | कुछ तात्रप्रापाण तत्त्व; तांबे की वस्तुओं का अभाव | शिकार और कृषि |

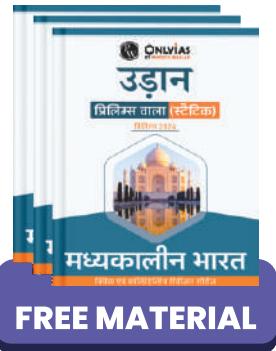
अन्य पुस्तके एवं कार्यक्रम



BOOKS



BOOKS



FREE MATERIAL



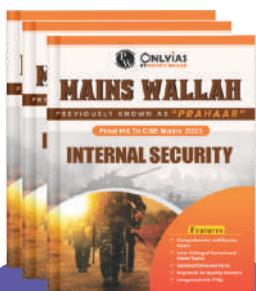
FREE MATERIAL

व्यापक कवरेज

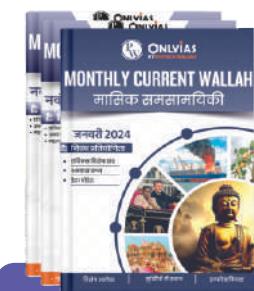
पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र (PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)

उडान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)

उडान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)



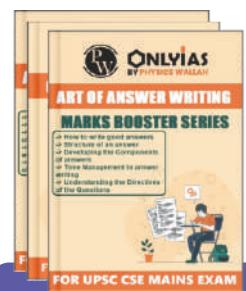
FREE MATERIAL



CURRENT AFFAIRS



CURRENT AFFAIRS



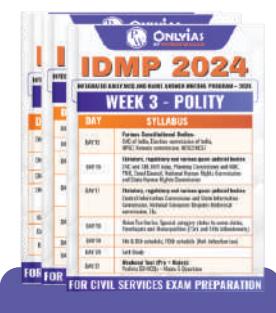
FREE MATERIAL

मेन्स रिवीज़न

मासिक समसामयिकी

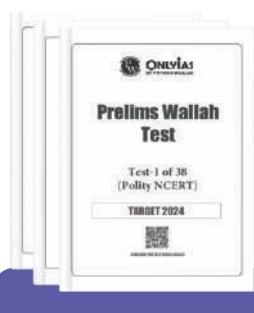
मासिक संपादकीय संकलन

क्विक रिवीज़न बुकलेट



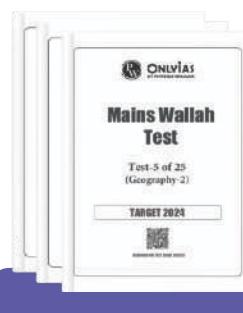
TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट



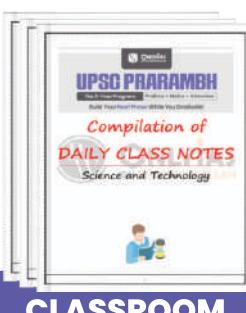
TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट



TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट



CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

— All Content Available in **Hindi and English** —

📍 Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Prayagraj, Lucknow, Patna

₹ 259/-

ISBN 978-93-6897-384-3



5d1d354-82cd-4ea3-a5aa-4a057c52a95d